जीवन के परिनामनिकी यह,...

(कविवर पण्डितश्री भागचन्दजी)

जीवन के परिनामनिकी यह, अति विचित्रता देखहु ज्ञानी ॥टेक॥

नित्य निगोदमाहितै कढ़िकर[१], नर परजाय पाय सुखदानी।
समकित लहि अन्तर्मुहुर्त में, केवल पाय वरै शिवरानी ॥1॥

मुनि एकादश गुणथानक चढ़ि, गिरत तहातें चित भ्रम ठानी।
भ्रमत अर्धपुद्गल परिवर्तन, किञ्चित् ऊन[२] काल परमानी ॥2॥

निज परिनामनिकी सम्भाल में, तातै गाफिल हवै मत प्रानी।
बन्ध मोक्ष परिनामनिही सों, कहत सदा श्रीजिनवरवानी ॥3॥

सकल उपाधिनिमित्त भावनिसों, भिन्न सुनिज परनतिको छानी।
ताहि जानि रुचि ठान होहु थिर, 'भागचन्द' यह सीख सयानी ॥4॥

---

१. निकलकर; २. कम